दिनांक **9.7.08**

''मैं और मेरा का सत्य ज्ञान ही आनन्द की प्राप्ति का आधार है''

– राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

माउण्ट आबू (राजस्थान): ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञानसरोवर परिसर में व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा 'परमात्म शक्ति की अनुभूति द्वारा तनाव मुक्त व्यवस्था' विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला का दिनांक **9** से **13** जुलाई तक आयोजन किया गया। जिसमें देश विभिन्न स्थानों से **800** से भी अधिक व्यापार एवं उद्योग से जुडे हुए प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह दि. **9** जुलाई **2008** को ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका एवं इस प्रभाग के चेअरपर्सन राजयोगिनी दादी हदयमोहिनी जी के उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

आदरणीय दादी हृदयमोहिनी जी ने कहा कि मैं और मेरा के सत्य ज्ञान का अभाव ही मनुष्य को विनाशी प्राप्तियों की ओर प्रेरित कर रहा है। जिसने स्वयं को अविनाशी आत्मा अनुभव कर लिया वह सदा ही आनंद की अनुभूति करता रहता है। उसे कोई भी बाह्य अभाव दुःखी नहीं कर सकता है। अभाव व विपरीत परिस्थितियों में भी वह सहज व सरल रह सकता है। स्वयं को भूलने के कारण ही देह, देह के सम्बन्धों व पदार्थों में सुख शांति पाने का असफल प्रयत्न करते रहता है और अंत में निराशा ही हाथ लगती है। हम परमात्मा की श्रेष्ठ संतान है, हमें किसी से शांति मांगने की या बाहर जाकर खोजने की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में हम आत्माओं का स्वधर्म शांति व प्रेम है। क्रोध करना, बीती बातों का व व्यर्थ बातों का चिन्तन करना यह देह भान की निशानी है जिसे आत्म चिन्तन व आत्म दर्शन द्वारा ही समाप्त किया जा सकता है। हम सभी सुख के सागर के बच्चे सुख स्वरुप हैं।

कृषि मित्र अवार्ड से सम्मानित, संघवी क्वालिटी प्रोडक्टस् के चेअरमन भ्राता विनय कुमार संघवी ने अपनी बात इन पंक्तियों से आरंभ की – 'मंजिल वही पाते है जो सपने देख सकते है, कितने भी हों छोटे पंख, ऊँची उडान हम भर सकते हैं। हौसले बुलंद हों तो बडी मंजिल भी सीमित साधनों द्वारा प्राप्त की जा सकती है।' वे ब्रह्माकुमारीज़ बिजनेस एण्ड इण्डस्ट्रीज द्वारा तनाव मुक्त प्रबंधन के लिए परमात्म शक्ति का अनुभव' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय परिसंवाद को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होने

कहा कि अच्छे कार्य में विघ्न अधिक पड़ते है लेकिन परमात्मा की मदद से सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है। इस आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा हम तीन दिनों में अवश्य ही अपना सकारात्मक परिवर्तन करके जायेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।'

प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. योगिनी बहन ने कहा कि राजयोग चिन्तन की ऐसी धारा है जो हमें श्रेष्ठ परिवर्तन की ओर ले जाती है। योग से ही मानव में संयम व आचरण में संतुलन आता है। योग का अभ्यास मनुष्य में प्रेम व वाणी में मधुरता भरता जाता है। मनुष्य की मानसिक विकृतियां समाप्त होकर मन सुमन तथा बुद्धि दिव्य बनती जाती है।

मुम्बई से पधारे प्रसिद्ध व्यापारी भ्राता चन्द्रेश्वर प्रताप सिंह जी ने कहा कि तनाव से मुक्ति की एक ही दवा है और वह है परमात्मा का साथ। हम यहां परमात्मा से शांति का बिजनेस करने आए हैं तो अवश्य ही प्रेम व आनंद से भरपूर होकर जाएंगे। मैं ने विदोशों में जाकर भी देखा है कि वहां किसी भी साधन की कमी नहीं है परंतु शांति का अभाव है। वहां के लोग भौतिक साधनों से विमुख होकर भारतीय योग दर्शन की ओर आकर्षित हो रहे हैं। हम अपनी संस्कृति का सम्मान करते हुए उसी अनुसार जीवन पद्धति अपनाऐं तो अवश्य ही सहज जीवन व सुखमय जीवन बनता जायेगा।

प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक भ्राता ब्र.कु. एम एल शर्मा जी ने अपने वक्तव्य में ब्रह्मा बाबा के जीवन के अनुभव बताकर एक आदर्श व्यापारी के लक्षण बतायें। पारिवारीक जीवन एवं व्यापारी जीवन की जिम्मेदारीयाँ निभाते हुए अपनी खुशी को नहीं गवाना चाहिए। सबकुछ परमात्मा का दिया हुआ है, हमें केवल निमित्त बनकर संभालना है तब ही खुश व हल्के रह सकेंगे। जिस ने अपना तन मन ईश्वर को अर्पण कर दिया उसकी सारी जिम्मेदारी वह ले लेता है।

प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. गीता बहन ने सभी का स्वागत किया तथा संस्था की विश्वव्यापी गतिविधियों की जानकारी दी। मुम्बई के ब्र.कु. हरेश मेहता जी ने प्रभाग के बारे में तथा इस कार्यशाला का उद्देश्य स्पष्ट किया।

इस स्वागत एवं उद्घाटन समारोह का मंच संचालन भ्राता ब्र.कु. अशोग गाबा जी ने अपने रमणिक एवं मधुर वाणी से किया।